ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 18 मई 2025

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 18 मई 2025 से 24 मई 2025

ज्येष्ठ कृ. 05 ● वि० सं०-2081 ● वर्ष 66, अंक 20, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 201 ● सृष्टि-संवत् 1,97,29,49,125 ● पृ.सं. 1-12 ● मूल्य - 5/- रू. ● वार्षिक शु. 300/- रू.

डीएवी हमीरपुर में समर्पण दिवस की पूर्व संध्या पर भजन संध्या का आयोजन

डीएवी हमीरपुर और आर्यसमाज हमीरपुर के संयुक्त तत्त्वधान में वैदिक भजन संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें 150 से अधिक आर्यसमाज के सदस्यों, विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों एवं स्थानीय नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस अवसर पर देशभर से आए 20 संन्यासियों, वैदिक विद्वानों तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारियों ने भाग लिया। यह सब अगले दिन सुजानपुर टिहरा में समर्पण दिवस में सम्मानित होने के लिए आए थे और यात्रा के एक पड़ाव के रूप में हमीरपुर में ठहरे हुए थे।

कार्यक्रम का उद्देश्य था देश के 8 राज्यों से आए इस अध्यात्म और विद्वत्ता के नवनीत को स्थानीय जनता से रूबरू करना। सभी संन्यासियों का भव्य स्वागत किया गया साथ ही उन्हें हिमाचली टोपी तथा पटका पहनाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हुआ।

कार्यक्रम में स्वामी प्रणवानंद जी, प्रसिद्ध कवि डॉ. सारस्वत मोहन 'मनीषी' तथा आचार्य नरेश जी ने अपने वचनों एवं कविताओं की ज्ञान गंगा से को अभिभूत किया।

भजन संध्या में भक्ति भाव से ओतप्रोत भजनों की प्रस्तुति दी गई, जिसने वातावरण को भक्तिमय बना दिया। इन भजनों की प्रस्तुतियाँ डी.ए.वी. मनाली, डीएवी न्यू शिमला तथा डीएवी दी माल शिमला द्वारा दी गई।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित एस के शर्मा मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने कार्यक्रम का संचालन किया।

हिमाचली व्यंजनों से परिपूर्ण रात्रि भोज के उपरांत कार्यक्रम का समापन हुआ।

डी.ए.वी. कोटा में पक्षियों के लिए परिंडे बाँधे गए

डीएवी पब्लिक स्कूल कोटा ग्रीष्म ऋतु में पक्षियों को राहत पहुँचाने हेतु एक सराहनीय पहल की गई। विद्यालय परिसर में विभिन्न स्थानों पर परिंडे (जल पात्र) बाँधे गए, ताकि पक्षियों को गर्मी में पानी मिल सके।

इस आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों में पर्यावरण, प्रकृति और जीव–जंतुओं के प्रति करुणा व संवेदनशीलता विकसित करना था। कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने स्वयं परिंडे सजाए और उन्हें विद्यालय परिसर में लगाया। बच्चों में इस कार्य के प्रति विशेष उत्साह और लगाव देखने को मिला।

प्रिंसिपल महोदया, श्रीमती पल्लवी अरोड़ा ने इस अवसर पर कहा कि परिंडे लगाना केवल एक सामाजिक कार्य नहीं, बल्कि बच्चों में संवेदनशीलता, जिम्मेदारी और प्रकृति के प्रति प्रेम पैदा करने का एक सशक्त माध्यम है। ऐसे प्रयासों से जीवन मूल्यों की शिक्षा मिलती है।

विद्यालय प्रबंधन ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि छोटे–छोटे प्रयास भी बड़े बदलाव ला सकते हैं और भावी पीढ़ी को प्रकृति के प्रति जागरूक बना सकते हैं।

डी.ए.वी बी.आर. बीना में दैनिक वैदिक हवन की परंपरा

डी.ए.वी बी.आर पब्लिक स्कूल, बीना में शिक्षा के साथ–साथ छात्रों में नैतिक एवं वैदिक मूल्यों का विकास करने हेतु प्रतिदिन हवन का आयोजन किया जाता है। यह विद्यालय की एक विशेष पहचान बन चुकी है।

श्री गौरांग ओता एवं श्री रत्नाकर चौबे प्रतिदिन हवन की सम्पूर्ण विधि संपन्न कराते हैं। इस संबंधित कक्षा के शिक्षक भी अपने निर्धारित क्रम अनुसार भाग लेते हैं।

नए सत्र पर एक विशेष हवन किया जाता है जिसमें समस्त शिक्षकगण और छात्रगण प्रातःकालीन सभा के समय उपस्थित होते हैं।

इसके अतिरिक्त, नर्सरी कक्षा में नव प्रविष्ट बच्चों के माता–पिता एवं बच्चों के लिए भी एक विशेष हवन का आयोजन किया जाता है। डीएवी बीआर पब्लिक स्कूल, बीना हमेशा नजदीकी गाँव और समाज में आर्यसमाज और वैदिक हवन को बढ़ावा देने का प्रयास करता है।

प्राचार्या दैनिक हवन की यह परंपरा न केवल छात्रों के चरित्र निर्माण में सहायक है, बल्कि उन्हें अपने गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत से भी जोड़ती है।

इसके चलते डी.ए.वी बी.आर. पब्लिक स्कूल, बीना आधुनिक शिक्षा और वैदिक संस्कृति का समन्वय करने वाला एक अनुकरणीय संस्थान बन गया है।

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 18 मई 2025 से 24 मई 2025

बड़े-छोटे सबको नमः

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।
यजाम देवान् यदि शक्नवाम, मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः।।

ऋग् 1.27.13

ऋषिः **आजीगर्तिः शुनः शेषः।** देवता **विश्वेदेवाः।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● (**महद् भ्यः नमः**) [ज्ञान और गुणों में] महानों को नमः (**अर्भकेभ्यः नमः**) छोटों को नमः, (**युवभ्यः नमः**) युवकों को नमः, (**आशिनेभ्यः नमः**) वयोवृद्धों को नमः। (**यदि शक्नवाम**) जहाँ तक [हम] समर्थ हों (**देवान्**) विद्वानों को (**यजाम**) सत्कृत करें। (**देवाः**) हे विद्वानों! (**ज्यायसः**) अपने से बड़े के (**शंसं**) स्तवन को [मैं] (**मा आवृक्षि**) न छोड़ूँ।

●मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसे अन्यों के प्रति अभिवादन आदि उचित शिष्टाचार का पालन करना होता है। मैं भी बड़े छोटे सबको अभिवादन करता हूँ; कृत्रिम और दिखावटी नहीं, किन्तु अन्तर्मन से 'नमः' करता हूँ। 'नमः' का मूल अर्थ है झुकना। झुकना सिर से भी होता है, मन से भी। राजा, राज्याधिकारी, माता, पिता, गुरु, अतिथि, साधु, संन्यासी, शिशु, कुमार, विद्यार्थी, युवक, वृद्ध, स्वामी, सेवक प्रत्येक से मिलने पर हृदय में जो आदर, श्रद्धा, प्रेम, आशीर्वाद आदि के भाव उत्पन्न होते हैं, वे सब 'नमः' के अन्दर समाविष्ट हैं। अतः अभिवादन के लिए वैदिक 'नमस्ते' शब्द अत्यन्त हृदय-ग्राही और उपयुक्त है। जब छोटे बड़े को 'नमस्ते' कहने में पारस्परिक सौहार्द और एक-दूसरे की उन्नति की कामना व्यक्त होती है। साथ ही 'नमः' में केवल शुभकामना ही नहीं, प्रत्युत बड़े-छोटे सबके प्रति कर्तव्य-पालन का भाव भी निहित है।

हे राष्ट्र के विद्यावृद्ध और गुणवृद्ध महान् नर-नारियों! हे उपदेशामृत-वर्षा से जनता को तृप्त करनेवाले वीतराग संन्यासियो! हे विद्वच्छिरोमणि तपोनिष्ठ वानप्रस्थ आचार्यो! हे देश के लिए प्राणों का उत्सर्ग करने को उद्यत महावीरों! हे जनता-जनार्दन की सेवा में तत्पर महापुरूषों! 'तुम्हें नमः'। हे निश्छल भावभंगियों और बाल-क्रीड़ाओं से मन को मुदित करने वाले अबोध शिशुओं! हे अल्पवयस्क कुमारो! हे गुरु के अधीन विद्याध्ययन में रत तपस्वी, व्रती ब्रह्मचारियों! तुम्हें 'नमः'। हे अपने संकल्प-बल से भूमि आकाश को झुका देनेवाले बली, साहसी, ओजस्वी, विजयी युवको! तुम्हें 'नमः'। हे परिपक्व, धीर, गम्भीर, अनुभवी, धन्य, वन्दनीय, वयोवृद्ध जनो! तुम्हें 'नमः'।

समस्त बालक, युवक, वृद्ध मेरे अर्चनीय देव हैं। जहाँ तक सम्भव होगा, मैं इन्हें स्नेह-सत्कार दूँगा, इनकी सेवा करूँगा। यह भी ध्यान रखूँगा। यह भी ध्यान रखूँगा कि जो मुझसे बड़े हैं, उनकी शंसना में, उनके उपकार के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन में मुझसे कोई त्रुटि न हो।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

तत्त्वज्ञान

● महात्मा आनन्द स्वामी

यह संसार क्या है ? हमारा जन्म कैसे और क्यों हो गया ? सुख, दुःख और मृत्यु क्या है ? इन प्रश्नों पर विचार कर रहे थे स्वामी जी। दुःख से अघाया मानव कैसे सांसारिक सुखों में डूब जाता है, इस प्रसंग में तीन प्रकार के मनुष्यों का खुलासा किया।

अब श्रोताओं का ध्यान 'योगवासिष्ठ' में वर्णित राम की व्यथा कथा की ओर आकर्षित कि और कहा जब तक व्यक्ति सांसारिक भोग–पदार्थों से विरक्त नहीं हो जाता तब तक 'तत्त्वज्ञान' को समझने की बुद्धि प्रकाशित नहीं होती।

किं धनेन किमम्बाभिः किं राज्येन किमीहया।
इति निश्चयवानन्तः प्राणत्यागजरः स्थितः।।

रामायण और योगवासिष्ठ से उद्धरण देकर स्वामी जी ने राम की व्यथा का चित्रण किया। सांसारिक असत् पदार्थों के झूठे सुख को भोगते हुए विक्रीत प्राणियों की तरह मानव परवश होकर बैठ जाता है।

धन सम्पत्ति भी दुःख का कारण बन जाती है और विद्वानों, शूरवीरों, उपकार करने वालों, कार्यदक्ष और मृदभाषी पुरुषों को मलिन कर देती है।

उधर जीवन घटता जा रहा है, आयु भागती चली जा रही है। जो लोग आत्म तत्त्व को जान चुके हैं उन महापुरुषों का जीना ही जीना है।

विषयानुरागी के लिए तत्त्वज्ञान भार है। अशान्त पुरुष के लिए मन भार है और अनात्मवान् के लिए शरीर भार है। **...अब आगे**

और यह अहंकार

आयु की बात कहकर फिर श्री राम जी अहंकार का वर्णन करते हैं :

अहङ्कारवशादापदहङ्काराद् दुराधयः।
अहङ्कारवशादीहा त्वहङ्कारो ममाऽऽमयः।
3।।

'अहंकार से ही विविध आपत्तियाँ– 'शारीरिक कष्ट' होते हैं। अहंकार से ही अनेक भीषण मानसिक क्लेश होते हैं और अहंकार से ही विषयानुराग अथवा दुश्चेष्टाएँ होती हैं। मेरा रोग अहंकार ही है।'

यानि दुःखानि दीर्घाणि विषमाणि महान्ति च।
अहङ्कारात् प्रसूतानि तान्यगात् खदिरा इव।।
6।।

'जैसे पर्वत से खैर के वृक्षों की उत्पत्ति होती है वैसे ही संसार में जितने चिरकाल स्थायी भीषण महादुःख हैं, उनकी उत्पत्ति अहंकार से ही हुई है।'

फिर चित्त तथा मन का प्रसङ्ग राम जी ने चलाया और कहा :

न प्राप्नोति क्वचित्किंचित् प्राप्तैरपि मयाधनैः।
नाऽन्तःसंपूर्णतामेति करण्डक इवाम्बुभिः।।
3।।
सर्ग 16।।

'अत्यन्त व्याकुल चित्त, युक्त और प्रयुक्त विचार के बिना इधर– उधर दूर से भी दूरतर प्रदेश तक, ग्राम में कुत्ते की तरह घूमता है, कहीं भी अपनी इच्छापूर्ति के उपाय को न पाकर दीन–हीन बना रहता है।'

तरङ्गतरलां वृत्तिं दधदालूनशीर्णताम्।
परित्यज्य क्षणमपि हृदये याति न स्थितिम्।।
22।।

'तरङ्गों के समान चंचलवृत्ति को धारण कर रहा मेरा मन स्थूल और सूक्ष्म अवयवों के छेद के सिवा एक क्षण के लिए भी अपने स्थान पर स्थिरता को प्राप्त नहीं होता।'

चेतः पतति कार्येषु विहगः स्वामिषेष्विव।
क्षणेन विरतिं याति बालः क्रीडनकादिव।।
23।।

'जैसे मांसभक्षी चील, कौए आदि पक्षी मांस को देखते ही उसे खाने के लिए दौड़ पड़ते हैं, हित और अहित का विचार नहीं करते, जैसे बालक खिलौने को देखते ही उसपर टूट पड़ता है और थोड़ी देर के पश्चात् उसे छोड़कर दूसरा खेल खेलने लगता है, वैसे ही मन भी इन्द्रियों द्वारा देखे गए विषयों में टूट पड़ता है, हित और अहित का विचार नहीं करता और क्षणभर में उससे विरक्त भी हो जाता है।'

अप्यब्धिपानान्महतः सुमेरून्मूलनादपि।
अपि वह्नयशनात् साधो विषमश्चित्तनिग्रहः।।
24।।

'हे साधो ! समुद्र को पीने, सुमेरु पर्वत को उखाड़ने और आग के अंगारे सटक जाने से भी कठिन चित्त को अपने वश में करना है।'

संसारजलधेरस्मान्नित्यमुत्तरणोन्मुखः।
सेतुनेव पयः पूरो रोधितोऽस्मि कुचेतसा।।
18।।

डी.ए.वी., सैक्टर-15 चण्डीगढ़ में 21 हवनकुण्डीय महायज्ञ

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित 151वाँ आर्य समाज स्थापना दिवस तथा उनके अनन्य भक्त, समाज सुधारक, महान् शिक्षाविद् डी.ए.वी. संस्था के संस्थापक व प्रथम प्राचार्य महात्मा हंसराज जी के 161वीं जयन्ती के शुभावसर पर आर्य युवा समाज डी.ए.वी. मॉडल स्कूल सैक्टर– 15–ए, चण्डीगढ़ में 21 हवनकुण्डीय महायज्ञ का आयोजन किया गया।

धर्माचार्य– आचार्य रमेश शास्त्री के कुशल संचालन में तथा विद्यालय के यज्ञ प्रेमी छात्र–छात्राओं के वेदपाठ द्वारा यज्ञीय कार्य बहुत ही सफल रहा।

मुख्य हवनकुण्ड पर प्राचार्या श्रीमती अनुजा शर्मा, श्री रमेश चन्द्र जीवन, श्रीमती उषा जीवन श्रीमती मधु बहल, श्री विनोद कपूर तथा श्री रजनीश भारद्वाज यजमान पद पर सुशोभित थे। शेष 20 हवनकुण्डों पर कक्षा पहली से बारहवीं तक के विद्यार्थीगण तथा अध्यापकगण व अन्य सभी विद्यालय परिवार के लोग यज्ञ में सम्मिलित हुए।

मुख्यातिथि, श्री रमेश चन्द्र जीवन जी ने सभी याज्ञिकों को आशीर्वाद दिया और महात्मा हंसराज जी के जीवन पर प्रकाश डाला और उन्होंने यह कहा यह दिन एक संकल्प का दिन है। उन्होंने कहा महात्मा हंसराज जी का जीवन त्याग, तपस्या व संघर्षों से जुड़ा रहा और उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में तो एक मिशाल कायम की। साथ ही साथ वे समाज व राष्ट्र के लिए भी एक जागरूक व्यक्ति रहे।

प्राचार्या श्रीमती अनुजा शर्मा ने सभी को इस पावन दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं तथा धन्यवाद किया।

प्रसाद वितरण, शान्तिपाठ एवं जयघोष के साथ कार्यक्रम को सुसम्पन्न किया गया।

के.पी.ए.के. महाविद्यालय में लिगल लिटरेसी के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियाँ

के.पी.ए.के. महाविद्यालय में प्रधानाचार्या श्रीमती रेखा गोयल भागी की अध्यक्षता में लीगल लिटरेसी के अंतर्गत सड़क सुरक्षा के नियमों पर विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित करवाई गईं जिसमें भाषण, पोस्टर मेकिंग, पेंटिंग, स्लोगन लेखन आदि गतिविधियाँ करवाई गईं। इन गतिविधियों में विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। विद्यार्थियों ने भाषण के माध्यम से सड़क पर चलने के नियमों का पालन करने का संदेश दिया। पोस्टर व स्लोगन के माध्यम से विद्यार्थी ने बताया गया कि यदि हम सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन करते हैं तो हम बड़ी दुर्घटनाओं से बच सकते हैं।

प्रधानाचार्या ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें हमेशा सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन करना चाहिए। स्कूटर, बाइक चलाते हुए हैलमेट का प्रयोग जरुर करें।

एम.आर.ए. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सोलन श्रमिक दिवस पर हुआ यज्ञ

एम.आर.ए. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सोलन में 1 मई 2025 को आर्य युवा समाज के तत्वावधान में प्रधानाचार्या मासूमा सिंघा जी के मार्गदर्शन में श्रमिक दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस विशेष अवसर पर सर्वप्रथम वैदिक यज्ञ का आयोजन किया गया तदुपरांत विद्यालय प्रशासन द्वारा कर्मचारियों के सम्मान में एक अल्पाहार कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर उन्हें उपहार स्वरूप बेड शीट्स भी भेंट की गइ, जिससे उनके चेहरों पर प्रसन्नता देखने को मिली।

प्रधानाचार्या जी ने अपने संबोधन में सभी श्रमिकों के कठिन परिश्रम और समर्पण की सराहना की। उन्होंने सभी को प्रेमपूर्वक और तत्परता से कार्य करते रहने का आग्रह किया। यह आयोजन सभी के लिए प्रेरणादायक रहा और इससे विद्यालय परिवार में एकता व सहयोग की भावना को फल मिला है।

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर दिल्ली में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर 2025 इस बार दिल्ली में दिनांक 7 जून से 15 जून 2025 तक संस्कार शिक्षा कुंज स्कूल, गोंडा रोड, गली नं0 9 बी, स्वतन्त्र नगर, नरेला, दिल्ली–110040 (मोबाईल नं. 9315254900) में आयोजित किया जा रहा है। इसमें भाग लेने के लिए 13 वर्ष से अधिक आयु की आर्य वीरांगनाएँ दिनांक 26 मई 2025 तक अपने नाम निम्नलिखित नम्बरों पर देवें ताकि व्यवस्था सुचारू रूप से हो सके।

साध्वी डॉ. उत्तमा यति	मृदुला चौहान	आरती खुराना	नीरज कुमारी
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्ष
9672286863	9810702760	9910234595	8920208536

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2025

डी.ए.वी. डी बी एन अजमेर में विद्यालय की 50वीं वर्ष गांठ पर 51 कुण्डीय यज्ञ

महात्मा हंसराज जयंती व दयानंद बाल निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय की 50वीं वर्षगाँठ पर स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में 51 कुंडीय यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। इस आयोजन में लघु नाटिका, भाषण प्रतियोगिता, कविता पाठ, चित्रकला व 51 कुण्डीय यज्ञ का भव्य अनुष्ठान किया गया।

ऋषि उद्यान से पधारे आचार्य, संत व ब्रह्मचारियों ने यज्ञ करवाया। मुख्य अतिथि ब्रह्मा के पद पर आचार्य सत्यनिष्ठ जी ब्रह्मचारी, यजमान के पद पर विद्यालय प्राचार्य श्री नवनीत ठाकुर तथा आचार्य ओम् मुनि जी, डॉक्टर आराधना आर्य, श्री विश्वास पारीक, आचार्य वासुदेव पदासीन रहे। गुरुकुल से आए लगभग सभी ब्रह्मचारियों ने

बच्चों को, अभिभावकों को यज्ञ करने की विधि बतलाईं वैदिक मंत्रों से संपूर्ण परिसर भक्तिमय और सुगंधित हो उठा। यज्ञ की पुस्तिका सभी को वितरित की गई जिसमें से सभी बच्चों ने वैदिक मंत्रों का उच्चारण किए।

आचार्य सत्यनिष्ठ ने अपने उद्बोधन में कहा कि यज्ञ से ईश्वर का स्मरण, पर्यावरण की शुद्धि, सकारात्मक ऊर्जा का संचार, आत्मशोधन, जन कल्याण की भावना का विकास होता है। बच्चों में संस्कार, उज्ज्वल चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्यों में वृद्धि होती है। आचार्य ओम् मुनि जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती व महात्मा हंसराज जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

डॉ आराधना आर्या ने महात्मा हंसराज व विद्यालय की नींव रखने वाले प्रोफेसर श्री कृष्ण राव वाब्ले के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला।

प्राचार्य श्री नवनीत ठाकुर ने सभी आए हुए अतिथियों, अभिभावको, बच्चों का हृदय से आभार व्यक्त किया तथा अपना अमूल्य समय देने के लिए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। उद्यान से पधारे आचार्यो, ब्रहमचारियों को प्रतीक चिहनों व भेंट देकर सम्मानित किया गया।

हंसराज पब्लिक स्कूल, सैक्टर-6 पंचकूला में रक्तदान शिविर

हंसराज पब्लिक स्कूल, सेक्टर–6, पंचकूला ने 3 मई 2025 को अपने विद्यालय परिसर में एक रक्तदान शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस शिविर का उद्देश्य अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों में रक्त की आपात आवश्यकताओं की पूर्ति करना था। यह शिविर पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ के ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग के सहयोग से आयोजित किया गया।

इस मानवीय पहल में कुल 102 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। इस नेक कार्य में अभिभावकों, पूर्व छात्रों, संकाय सदस्यों तथा समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

विद्यालय की आचार्या ने बताया कि विद्यालय विगत 20 वर्षों से नियमित रूप से रक्तदान शिविरों का आयोजन कर रहा है। श्रीमती जया भारद्वाज ने स्वयं रक्तदान कर अनुकरणीय नेतृत्व का परिचय दिया। उन्होंने कहा "सहानुभूति और सामूहिक सहभागिता ही सतत समाज की आधारशिला हैं। जब हमारे छात्र कक्षा से बाहर के सामाजिक प्रयासों में भाग लेते हैं, तो वे विचारशील और उत्तरदायी नागरिक बनने की दिशा में अग्रसर होते हैं। सफल रक्तदान अभियानों के 20 वर्षों ने सामाजिक दायित्व के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को और भी प्रगाढ़ किया है।"

डी.ए.वी. मूनक ने मनाई बाबू बृषभान जी की पुण्यतिथि

बाबू बृष भान डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल मूनक में बाबू बृष भान जी (महान स्वतंत्रता सेनानी,

राजनेता एवं पेप्सू राज्य के भूतपूर्व मुख्य मंत्री) की पुण्यतिथि के अवसर पर एक हवन यज्ञ का आयोजन किया गया, इसमें विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री संजीव शर्मा, अध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया।

इसके पश्चात् विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं अध्यापकों ने बाबू जी को फूलमाला एवं श्रद्धासुमन अर्पित कर उनके भारत के स्वतंत्रता संग्राम, शिक्षा एवं खेलों के क्षेत्र में दिए अनमोल योगदान को याद किया गया।

प्रधानाचार्य ने अपने उद्बोधन में बाबू जी के जीवन ओर कार्यों पर प्रकाश डालते हुए उनके राष्ट्र प्रेम और समाज कल्याण की भावना की चर्चा की। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर एक अच्छे समाज के निर्माण में योगदान देने के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**